Er./Dr. Tanmaya
A.M.I.E. (India)
Executive Engineer (Retd.)
CONSULTANT HOMOEOPATH
Exponent of Vedic Philosophy
Founder of Science & Spirituality
Co-ordination Federation

श्री सनातन धर्म सभा (पंजीकृत)
शिव मन्दिर, लोक विहार, दिल्ली–११००३४

Gayatri Dham
B-340, Lok Vihar,
Pitam Pura, Delhi-110034
Ph. : 7184145

DELHI, Dt. 9.7.2000

'गो रक्षा' - आज के संदर्भ में

मान्यवर !

आप विद्वानों में परम अग्रणी हैं, अतः उपरोक्त विषय पर लिखे एक लेख की प्रथम प्रति आपको प्रेषित कर रहा हूँ ।

कृपा करके अपने अमूल्य समय में से कुछ क्षण निकाल कर इसका अवलोकन करें तथा मुझे मार्गदर्शन देने की कृपा करें ।

धन्यवाद एवम् आदर सहित !

इंजी./डा. अवध बिहारी लाल गुप्ता "तन्मय"

Author of : Internationally Famous Thesis on Homoeopathy
Scientific Papers on Scriptures e.g. Gayatri, Geeta, Raj & Gyan Yoga etc.
Dharam Prachar Mantri : Shiv Mandir, Lok Vihar, Pitam Pura, Delhi-34
Executive Member : Bharat Vikas Parishad, Lok Vihar Branch
Life Member of : 'Kalyan' Geeta Press Gorakhpur, 'Yog Manjri' Bhartiya Yog Sansthan
Member : Agarwal Samaj & Vaishya Panorama

'गो रक्षा' - आज के संदर्भ में

सनातन धर्म में गोविन्द, गायत्री, गो और गंगा नामों का भारी महत्व माना जाता है । चारों नामों में से 'गो' एवम् 'गंगा' इन दो नामों के सम्बन्ध में लम्बे समय से समाज में एक बड़ी गलत धारणा चली आ रही है । इस गलत धारणा का उदय कब और कैसे हुआ यह तो ठीक-ठीक कहना कठिन है, परन्तु इस कारण देश को भूतकाल में भारी हानि हुई है, अभी भी हो रही है तथा आगे भी सम्भावना बनी रहेगी, यदि इसे ठीक न समझा गया तो । आइए ! पहले "गो" पर चर्चा करने से पूर्व इस शब्द की रचना की पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी प्राप्त कर लें ।

1. "प्रतीकीकरण" (Symbolisation) - सनातन धर्म का आधार :- ऋषि विश्वामित्र ने सर्वप्रथम गायत्री मंत्र में सगुण-साकार उपासना के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था । *(कृपया लेखक द्वारा लिखित "हिन्दू धर्म का आधार स्तम्भ - गायत्री मंत्र" नामक लेख देखें)* ऐसा लगता है, कि वैदिक काल के प्रारम्भ में ही साकार प्रतीकों की अवधारणा कर ली गई थी । ब्राह्मण ग्रंथों में इन्हीं देवताओं की तथा कुछ और विकसित रूप से व्याख्या की गई । अन्त में पौराणिक काल में वेदों के गूढ ज्ञान को सरल बनाने हेतु कथाओं एवम् मिथकों[1] का सृजन किया गया तथा प्रतीकों (मूर्तियों) को कलाकृतियों के रूप में ठोस आधार प्रदान किया गया और तब इस आधार पर वैश्वानर से लेकर ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, लक्ष्मी, पार्वती, नारद, सूर्य, अग्नि, इन्द्र, वरुण, कुबेर, जल, पृथ्वी (मातृभूमि) आदि सभी देवी-देवताओं को मानव आकृति प्रदान की गयी । प्रतीकीकरण से पूजा-अर्चना करने में जन-साधारण को बहुत सुविधा का अनुभव हुआ, अतएव इस विचार को तत्कालीन समाज ने भारी बहुमत से स्वीकार कर लिया । दूसरा कारण यह भी लगता है, कि उस काल के मनीषी भविष्य दृष्टा थे । उन्हें यह निश्चय ज्ञान था, कि प्रकृति के सिद्धान्तों के अनुरूप भारतीय संस्कृति एक समय ऐसे शासन के दौर से गुजरेगी, जब वैदिक ग्रंथों की होली जलायी जायगी तथा विद्वानों को चुन-चुन कर कत्ल किया जायगा अर्थात् ज्ञान-विज्ञान की प्रलय हो जायगी, अतएव उन्होंने वेद के ज्ञान को बीज रूप में परिवर्तित करने का निर्णय लिया तथा सम्पूर्ण ज्ञान को प्रतीकों एवम् कथाओं के रूप में रचकर हम तक पहुँचा गये । इस बात का संकेत मार्कण्डेय पुराण में हूँ मिलता है :- पृथ्वी पर प्रलय आ गयी । सब ओर जल ही जल हो गया और सभी कुछ नष्ट हो गया । तब सात ऋषियों ने पृथ्वी पर से बीजों को इकट्ठा किया और उन्हें नाव पर रखकर नाव को खेते हुए आगे बढ़े । तब उन्हें भगवान कृष्ण बाल रूप में पैर का अँगूठा चूसते हुए पीपल के पत्ते पर मुस्कुराते हुए दिखे, इत्यादि... । **यह भाषा प्रतीकों की भाषा है । आशा है, कि आदरणीय पाठकगण इसे ठीक से समझने का प्रयास करेंगे ।**

इस प्रकार प्रतीकों द्वारा उपासना करना हिन्दू धर्म की विशेषता बन गयी । प्रतीकों का निर्माण मिट्टी, पत्थर, धातु, लकडी आदि सभी प्रकार के पदार्थों से किया गया । **साधक मूर्ति में भगवान की भावना करके साधना करने लगा । यद्यपि इस सगुण-साकार पूजा पद्धति का विरोध करने वाले निराकारवादी तब भी थे और अब भी हैं ।**

2. प्रतीकीकरण के कुछ उदाहरण :- सूर्य देवता को स्वर्ण मुकुट से मण्डित सात घोड़ों[2] के रथ पर तेजस्वी मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया । अग्नि शिखाओं के मध्य हाथ में हवि का चरु[3] लिए अग्नि देवता के प्रतीक का निर्माण किया गया । करोडों वोल्ट की बिजली[4] के स्वामी गरजते हुए मेघ को सभी देवों एवम् इन्द्रलोक का राजा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया । उसके हाथ में बज्र[5] दे दिया गया तथा उसको हर प्रकार की भोग-विलास की सामग्री उपलब्ध करायी गयी । पृथ्वी को शेषनाग पर स्थित दिखलाया गया । शेषनाग गुरुत्वाकर्षण का प्रतीक है । इसी प्रकार प्रकृति में प्राप्त सभी सूक्ष्म शक्तियों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, हनुमान, दुर्गा, इत्यादि को मानव रूप दिया गया । तत्पश्चात् पशु-पक्षियों, वृक्षों आदि को प्रतीकों की भाषा में उनकी विशिष्ट प्रकृति के अनुरूप रूपान्तरित किया गया । सनातन धर्म में प्रतीकों की संख्या सैंकड़ों में न होकर हजारों में है । बीजाक्षर, बीजमंत्र आदि भी प्रतीकीकरण की कड़ी में ही समझने होंगे । स्पष्ट है, कि इन सबका गठन साहित्यकारों, कलाकारों और वैज्ञानिकों की संयुक्त गोष्ठी में किया गया होगा ।

3. मातृभूमि का प्रतीक "गो" :- हिन्दी वृहद्कोश में 'गो' शब्द के सत्ताइस अर्थ दिए गये हैं, उनमें से कुछ निम्न प्रकार से हैं - इन्द्रियाँ, वाणी, रश्मि, बैल, गाय, पृथ्वी (मातृभूमि) इत्यादि । अतएव प्रतीकीकरण की इस कडी में 'गो' को मातृभूमि का प्रतीक तय किया गया, कारण कि जिस प्रकार से हमारी पृथ्वी (मातृभूमि) हमारा भरण-पोषण अन्न, फल-फूल, जल, वनस्पति आदि पैदा करके करती है; ठीक उसी प्रकार 'गो' भी अपने दूध से मूत्र, गोबर एवम् पंचगव्य आदि से हमारे जीवन को माता की भाँति पालती पोषती है । भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण भी 'गो' द्वारा उत्पन्न बैलों से कृषि कार्य में 'गो' का सदियों से महान योगदान रहा है । इस प्रकार गो ने जीवन दायिनी बनकर हमारे देश की महान सेवा की है ।

4. प्रतीक से भटकाव :- पृथ्वी पर सभी तैंतीस कोटि (प्रकार) के देवताओं[6] (वसु 8, रुद्र 11, आदित्य 12, इन्द्र 1, प्रजापति 1) का वास है, अतएव पौराणिकों ने 'गो' (प्रतीक) में भी इन सभी देवताओं का वास बतला दिया । इस प्रकार की मान्यता के तुरन्त बाद ही जैसे हमने मन्दिर में भगवान शंकर, भगवान विष्णु, भगवान राम एवम् कृष्ण आदि की मूर्तियाँ स्थापित करके भक्ति

परिभाषाएं :- 1. मिथक = ऐसी कथा जिसका शाब्दिक अर्थ कुछ और हो, परन्तु वास्तविक अर्थ कुछ और 2. सात घोडे = सात रंगों के प्रतीक अर्थात् VIBGYOR 3. चरु = शक्ति पुञ्ज । 4. विद्युत शक्ति सभी अन्य शक्तियों में बदली जा सकती है, इसलिए इन्द्र सभी देवों का राजा कहलाया । 5. बज्र = करोड़ो वाल्ट की विद्युत का प्रतीक । 6. (अ) वसु = जो देवता पृथ्वी पर वास करते है तथा जिनसे सम्पूर्ण जगत का जीवन चलता है, जैसे जल, वायु, अग्नि, इत्यादि । (ब) रुद्र = पृथ्वी पर जिन शक्तियों के द्वारा विनाश होता है, जैसे बाढ, अकाल, तूफान, जंगल की आग, ज्वालामुखी, इत्यादि । (स) आदित्य = बारह मास के सूर्य । (द) इन्द्र = गरजता हुआ मेघ (य) प्रजापति = ब्रह्मा ।

भाव से उनकी पूजा-अर्चना शुरू कर दी, ठीक उसी प्रकार से गाय भी हमारी चलती-फिरती देवता बन गयी और हम श्रद्धा भक्ति से उसकी आरती उतारने लगे । सभी को आदर देना और सब के प्रति विनम्र बने रहना हिन्दू संस्कृति का मुख्य अंग रहा है । इसीलिए हम "गो" के द्वारा प्राप्त लाभों से इतने भावुक हो उठे, कि हमारे मनों में यह भाव गहराने लगा, कि गाय की हत्या नहीं होनी चाहिए । ऐसा लगता है, कि कदाचित् तब गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करके अवध्य घोषित कर दिया गया हो । ***वास्तव में, मातृभूमि की हत्या न हो, भाव तो यह होना चाहिए था, परन्तु भावना के अतिरेक में हम प्रतीक और सत्य के बीच अन्तर करना ही भूल गये ।***

जिस मातृभूमि का गुणगान हम "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" कह कर एवम् "वन्दे मातरम् शस्य स्यामलाम् मातरम्" खड़े होकर सम्मान पूर्वक करते हैं, उस मूल को भूल कर हम प्रतीक में भटक गये, परन्तु क्या हम जननी जन्मभूमि का वास्तव में आदर करते हैं ? सच पूछिए, तो पूर्वजों द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप न तो हम आदर ही करते हैं और न ही सेवा । हाँ, कभी-कभी हम मातृभूमि की रक्षा अवश्य कर लेते हैं; वह भी कभी-कभी ।

इतिहास साक्षी है, कि विधर्मियों ने अपनी फौज के आगे सौ गायें खड़ी कर लीं और हमने अपनी मातृभूमि उनके हवाले कर दी । इस भूल के कारण हमने एक सहस्र वर्ष तक गुलामी भी भोगी, फिर भी हमें अपनी ग़लती का एहसास अभी तक नहीं हुआ है ।

5. मातृभूमि की रक्षा एवम् सेवा पूजा के मानदण्ड :- अब आइए ! यह समझने का प्रयास करें, कि गौ हत्या का क्या अर्थ है तथा मातृभूमि की रक्षा एवम् सेवा पूजा का क्या अर्थ है ?

(अ) मातृभूमि की रक्षा :- सन् 1962 में तत्कालीन सरकार ने भारतभूमि का चालीस हजार वर्ग मील क्षेत्र चीन के हवाले कर दिया था, यह *"गो हत्या"* का प्रत्यक्ष प्रमाण है । कारगिल में मातृभूमि की एक-एक इंच भूमि को दुश्मन से मुक्त करवा कर वर्तमान सरकार ने *"गो रक्षा"* का जीता जागता उदाहरण प्रस्तुत किया है । कश्मीर क्षेत्र में हमारी फौज के रण बाँकुरे अपनी जान की बाजी लगाकर दिन-रात उसकी रक्षा में जुटे रहते हैं ।

(ब) पर्यावरण की रक्षा :- आज हम सब मिलकर पूरी पृथ्वी के पर्यावरण को दिन-रात प्रदूषित करने में लगे हुए हैं । नदियाँ, समुद्र, वायु, पृथ्वी सब ओर प्रदूषण ही प्रदूषण है । वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से स्वच्छ वायु मिलना कठिन होता जा रहा है । ओजोन छतरी तक में छेद हो गया है । पूरी पृथ्वी का तापमान बढ़ गया है । वर्षा चक्र तथा ऋतु चक्र प्रभावित हो रहे हैं । पृथ्वी पर निवास करने वाले अन्य सभी प्राणियों को हमने उनके द्वारा शुद्ध जल एवम् शद्ध वायु प्राप्त करने के अधिकार को छीन लिया है, क्या यह घोर पाप नहीं है ?

(स) नैतिक एवम् आध्यात्मिक प्रदूषण :- पर्यावरण के प्रदूषण के अतिरिक्त ध्वनि प्रदूषण एवम् विचारों का प्रदूषण सबसे खतरनाक कार्य है । इस कारण पृथ्वी पर अनेक कठिन रोग फैल रहे हैं और सात्विक वृत्ति के लोग दुःखी हो रहे हैं । रामायण काल में भी जब इसी प्रकार के प्रदूषण की अति हो गयी थी, तब कहा जाता है, कि पृथ्वी "गो" का रूप धारण करके ब्रह्मा के पास गुहार मचाने गयी थी । जल, वायु, अग्नि, इन्द्र आदि सभी देवता भी साथ में भगवान से पुकार करने गये थे । आज के संदर्भ में भी इस प्रतीकात्मक भाषा को ठीक से समझने की आवश्यकता है । रामायण काल जैसा ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, घृणा, ईर्ष्या, राग, द्वेष रूपी दस सिर वाला रावण हम सब पर बुरी तरह से हावी है और यह तब तक हावी रहेगा, जब तक कि हमें भौतिक जगत के भोगों की कामना बनी रहेगी अथवा जब तक हम इन भोगों की कोई सीमा रेखा तय नहीं करेंगे । रावण के इसी ताण्डव के कारण ही आज समाज अत्याचार, हत्याएं, लूटपाट, रिश्वत खोरी, पापाचार, भ्रष्टाचार से प्रताड़ित हो रहा है । तो बतलाइए, कि हम मातृभूमि की सेवा कहाँ कर रहे हैं ? टैक्स चोरी, बिना काम के वेतन लेना, हर क्षेत्र में बेईमानी, बड़े-बड़े घोटाले, चोरी और सीनाजोरी, कानूनी दाँव-पेंच से बच निकलना, नैतिक मूल्यों का भारी पतन, यह सब कहाँ की मातृभूमि की सेवा है ? ***क्या यही "गो हत्या" नहीं है ?*** ज़रा विचार तो कीजिए और हम हैं, कि "गो हत्या" का अर्थ गाय (पशु), जो मातृभूमि का प्रतीक है, उसकी हत्या न की जाय, इस विचार तक ही सीमित रहे जा रहे हैं । भारतवासियो ! अब तो बस करो । अब तो जागो । कृपा करके विज्ञान की पीढ़ी को तो सही-सही मार्ग दिखलाओ ।

6. "गंगा नदी" - आकाशगंगा का प्रतीक :- हमारी आकाशगंगा में एक खरब से भी अधिक तारे (सूर्य) हैं । हम सभी पर इन सूर्यों से निरन्तर अनन्त शक्ति कणों (Electro magnetic particles) की वर्षा होती रहती है, इस प्रकार से सूर्य हम सब पृथ्वीवासियों के लिए प्राण शक्ति के स्रोत हैं । आकाशगंगा आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक एक श्वेत नदी की भाँति फैली दिखलायी पड़ती है । ठीक उसी प्रकार गंगा नदी भी श्वेत रूपिणी है । भारत की संस्कृति का जन्म नदियों के किनारे हुआ था । सारे गाँव एवम् शहर नदियों के किनारे ही बसाए जाते थे । इस प्रकार सभी नदियाँ विशेषकर गंगा भारत की जीवनधारा (Life-line) रही है । गंगा नदी का पानी सड़ता नहीं है । कहते हैं, कि गंगा हिमालय के उन भागों से होकर आती है, जहाँ पर उसमें गंधक एवम् चुम्बकीय गुण मिल जाते हैं, जिसके कारण इसके पानी में न सड़ने का गुण पाया जाता है तथा स्नान करने पर अन्य नदियों की अपेक्षा अधिक शक्ति (ओज) की प्राप्ति होती है, अतएव इसे पाप नाशिनी की संज्ञा दी गयी । इन्हीं कारणों से इसे आकाशगंगा के प्रतीक के रूप में मान्यता भी दे दी गयी । इसे पूज्यनीय माना जाने लगा, परन्तु मुख्य स्रोत अर्थात् आकाशगंगा जो ब्रह्म का शरीर अथवा विराट पुरुष कहा गया, उससे इसके जुड़ाव को भुला दिया गया, अतएव इसकी पूजा-अर्चना से जो लाभ मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पा रहा है ।

वास्तव में, आकाशगंगा पर ध्यान एकाग्र करने से महान प्राणशक्ति का उद्दीपन होता है । आकाशगंगा के चित्र को ध्यान से देखिए । तारों की स्थिति कुछ इस प्रकार से है, कि केन्द्र में 'शिवलिंग' तथा चारों ओर 'ॐ' जैसा चित्र बन रहा है । यहीं से बारह ज्योतिर्लिंगों की स्थापना के विचार का जन्म हुआ होगा तथा "ॐ" को उपासना के लिए चुन लिया गया होगा । *(कृपया लेखक द्वारा लिखित हिन्दू धर्म का प्रादुर्भाव-भाग १ लेख को देखें)*

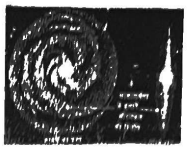

हमारी आकाशगंगा

1. आकाशगंगा की लम्बाई = एक लाख प्रकाश वर्ष
2. हमारे सूर्य की केन्द्र से दूरी = 32,000 प्रकाश वर्ष
3. एक प्रकाश वर्ष = 94×10^{11} कि.मी.

कृपया चित्र को ध्यान से देखें । तारा समूहों की रचना कुछ इस प्रकार से है, कि 'ॐ' जैसा चित्र स्वत: बन रहा है । केन्द्र में शिवलिंग जैसा है ।

7. पौराणिकों द्वारा कथाओं का सृजन :- प्रतीकों के कोषागार से पौराणिकों ने कुछ प्रतीकों को चुनकर गंगावतरण के मिथक का सृजन कर डाला । इस कथा में राजा भगीरथ को मुख्य पात्र बनाकर 'पृथ्वी' पर जीवन किस प्रकार अवतरित हुआ, यह बात बतलाने का प्रयास किया गया है, जबकि आज के वैज्ञानिक इस पहेली की खोज में अभी भी लगे हुए हैं । कुछ लोग इस कथा को राजा भगीरथ एक कुशल इंजीनियर थे, बतलाकर गंगा की धारा को तिब्बत से भारत की ओर मोड़ लाने के अर्थ में लेते हैं, जो बेमेल है । **तारों से विकीरण (Radiation) के द्वारा जीवनधारण करने के मूल कण (Electron, Proton, Neutron) पृथ्वी पर पहुँचे, इस कथा का वैज्ञानिक अर्थ निकलता है । तत्पश्चात् जीवन** धारण के रसायन (अमीनो एसिडों) का निर्माण अनुकूल परिस्थितियों में इन कणों द्वारा हुआ ।

पौराणिकों द्वारा वैज्ञानिक तथ्यों को रोचक कथाओं में पिरोया जाना भारतीय मनीषियों की श्रेष्ठ शैली रही है । इन्हें आम जनता ने सत्य कथा मान लिया है । अब जब इन कथाओं की वैज्ञानिक दृष्टि से चीर-फाड़ की जाती है, तो आस्था को धक्का लगना स्वाभाविक है, परन्तु जो वैज्ञानिक सत्य निकलकर सामने आते हैं, वे हमें बहुत ही चौंकाने वाले हैं, इन पर हमें गर्व होना चाहिए।

अबोध भक्तों के द्वारा "हर हर गंगे" की आरती से भक्तिभाव तो जागृत हो सकता है, परन्तु दिशा ग़लत होने के कारण लक्ष्य वेध होना सम्भव नहीं है, ऐसा मेरा मानना है, कारण कि भगवान राम की पत्थर की मूर्ति में हम भगवान राम की भावना करते हैं, तब हमें उनके दर्शन हो सकने की सम्भावना है, यह दिशा ठीक है, परन्तु 'गो' और 'गंगा' की पूजा के संदर्भ में भी हमें ऐसी ही भावना करनी चाहिए थी, कि हम मातृभूमि एवम् आकाशगंगा की पूजा कर रहे हैं ।

8. भावी पीढ़ी के प्रति कर्त्तव्य :- चूँकि भावी पीढ़ी लगभग विज्ञान की पीढ़ी होगी और विज्ञान के विद्यार्थी बहुत ही खोजी प्रवृत्ति के होते हैं । वे हर विषय की तह तक जाकर जानकारी पाना चाहते हैं । अतएव आशा है, कि उपरोक्त लेख की जानकारी समाज के हर घटक के लिए लाभकारी होगी और कथाओं और प्रतीकों में लिपटा वैदिक ज्ञान आज के युग की भाषा अर्थात् विज्ञान के शब्दों में ही बतलाने से नयी पीढ़ी के प्रति हम अपना ऋषि-ऋण चुका सकेंगे ।

प्रतीकों से लाभ भी हैं तथा हानि भी, परन्तु संसार में ऐसी कोई योजना हो ही नहीं सकती जिसमें कुछ लाभ और कुछ हानि न हो, सो इस योजना में भी है । इसलिए ऐसा समझकर भारतवासियों को विशेषकर धर्म की दिशा-निर्देश करने वालों को स्वयम् जागना होगा तथा समाज को भी सही-सही बतलाना होगा, वर्ना ऐसा समय आ सकता है, जब कि नयी पीढ़ी की धर्म पर सम्पूर्ण आस्था समाप्त हो जाय । **ध्यान रहे, कि मूल प्रश्न वर्तमान पीढ़ी की आस्था भंग करने का नहीं है, अपितु भावी पीढ़ी को वैदिक ज्ञान हस्तान्तरित करने का है ।**

9. सारांश :- (अ) **समग्र दृष्टि :-** जब भी कभी मानव एकांश का दर्शन करेगा, तो उसका राह में भटक जाना स्वाभाविक है । आज समाज में भ्रान्तियाँ क्यों हैं ? क्योंकि हमारी दृष्टि विशाल अथवा समग्रता पूर्ण नहीं है । विज्ञान हमें समग्रता का दर्शन कराता है, अतएव उपरोक्त विश्लेषण आज के युग की आवश्यकता है । **विज्ञान विध्वंशात्मक नहीं है । हर वस्तु अथवा योजना का दुरुपयोग और सदुपयोग करना मानव की इच्छा पर निर्भर है ।** अतएव मित्रो ! शान्तिपूर्वक विचार करें । जो बातें विज्ञान की कसौटी पर खरी नहीं उतरेंगी, वे बिना तेल के दीपक की भाँति स्वयम् बुझ जायगी । इससे हिन्दुत्व का भारी अहित होगा । जो अब तक हुआ सो हुआ, पर अब तो देश तथा समाज की रक्षा करने का व्रत लेना ही पड़ेगा तथा समाज को भ्रान्तियों से मुक्त करना ही होगा । **याद रखो ! विज्ञान के बिना धर्म अंधश्रद्धा भर है, जो न राष्ट्र के हित में है और न समाज के ।**

(ब) प्रतीकों की रक्षा :- प्रतीकों की रक्षा करना हिन्दू संस्कृति की परम्परा रही है, अतएव यदि सरकार चाहे तो 'गो' को राष्ट्रीय पशु तथा 'गंगा' को राष्ट्रीय नदी घोषित करके बहुत हद तक इन दोनों महत्वपूर्ण प्रतीकों की सार्थक रक्षा करने में सहायता कर सकती है । इस प्रकार प्रतीकों की मर्यादा भी बनी रहेगी तथा समाज में विज्ञान सम्मत चेतना का जागरण भी होगा ।

(स) कल्कि अवतार :- हिन्दू ग्रंथों में कहा गया है, कि कलिकाल में भगवान अवतार धारण करके घोड़े पर चढ़कर आएंगे तथा तलवार द्वारा दुष्टों का विनाश करेंगे । परमाणु युग में कोई भी तलवार से तो शायद ही किसी का विनाश कर सके, परन्तु प्रतीक की भाषा में घोड़ा और तलवार के **अर्थ तीव्र गति वाले विज्ञान सम्मत तीक्ष्ण विचार ही उपयुक्त लगते हैं,** क्योंकि दुष्ट विचारों को शुद्ध एवम् वैज्ञानिक विचारों द्वारा ही काटा जा सकता है । अतएव उपनिषदों के उद्घोष के अनुसार हे बुद्धिजीवियो ! जागृत ! उत्तिष्ठ ! वरान्निबोधत ! जागो ! उठो ! और तब तक संघर्ष करते रहो, जब तक कि सत्य की विजय न हो जाय । अस्तु !

शुभम् भूयात् !

इंजी०/डा० अवध बिहारी लाल गुप्ता "तन्मय"
गायत्री धाम, बी-340, लोक विहार, पीतम पुरा,
दिल्ली-110034 फोन: 7184145

नोट: आदरणीय पाठकों से निवेदन है कि वे अपने विचारों से लेखक को अवगत कराएं, जिसके लिए लेखक उनका अग्रिम धन्यवाद करता है।